नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी "बी"
महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर
स्थापित २००५ ई.
7897475917, 9794299451
Website: www.mpm.edu.in
E-mail : mpmpg5@gmail.com

पत्रांक..... दिनांक : 22-11-2019

प्रकाशनार्थ

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर में महारानी लक्ष्मीबाई के प्राण बचाने वाली **विरांगना झलकारी बाई** के जन्म दिवस पर एक विशेष सभा का आयोजन किया गया। आयोजित कार्यक्रम में **डॉ. सुभाष गुप्ता** ने झलकारी बाई से जुड़े प्रेरक प्रसंगो को बताते हुए कहा कि भारत की स्वाधीनता के लिए 1857 ई. में हुए संग्राम में पुरुषों के साथ महिलाओं ने भी कंधे से कंधा मिलाकर बराबर का सहयोग दिया था, इन्हीं में से एक विरांगना झलकारी बाई थी जिसने अपने विरोचित कार्यो से पुरूषों को भी पीछे छोड दिया। झलकारी बाई एक महान विरांगना थी जो, झांसी की सेना में महिला शाखा 'दुर्गा दल' की सेनापति थी। झलकारी बाई को कोई औपचारिक शिक्षा प्राप्त नहीं हो पाई लेकिन, उन्होंने घुड़सवारी और हथियारों का प्रयोग करने में महारथ हासिल करके स्वयं को एक कुशल योद्धा के रूप में विकसित कर लिया। झलकारी बाई बिल्कुल रानी लक्ष्मीबाई की तरह दिखती थी अर्थात दोनों के रूप में अलौकिक समानता थी। इसी बात का लाभ उठाकर उन्होंने अंग्रेजो के साथ युद्ध के दौरान स्वयं रानी लक्ष्मीबाई का छद्मभेष धारण कर लिया और झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई को किले से सुरक्षित निकाल दिया।

झलकारी बाई की वीरगाथा आज भी बुंदेलखण्ड की लोककथाओं और लोकगीतो में सुनी जा सकती है। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने झलकारी बाई की बहादुरी को निम्न प्रकार पंक्तिबद्ध किया है–

आकर रण में ललकारी थी, वह झांसी की झलकारी थी।
गोरों को लड़ना सीखा गई, रानी बन जोहर दिखा गई।
है इतिहास में झलक रहीं, वह भारत की सन्नारी थी।

भारत सरकार ने वर्ष 2001 में झलकारी बाई के सम्मान में एक डाक टिकट जारी किया है। त्याग और बलिदान कि अनुठी मिशाल पेश करने वाली विरांगना झलकारी बाई को यह महाविद्यालय परिवार सतत नमन करते हुए विनम्र श्रद्धांजलि देता है। कार्यक्रम में सभी शिक्षक, कर्मचारी तथा विद्यार्थी उपस्थित रहे।

(डॉ. राहुल मिश्रा)
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी